श्री डी. एन कल्हन

(प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्रकार एवं आलोचक)

जासूसी साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये हमें ७० वर्ष पीछे जाना पड़ेगा, क्योंकि आज का जासूसी साहित्य किसी न किसी रूप में पुराने तिलस्मी उपन्यासों से जुड़ा हैं - जो लेखक विदेशी रोमांचक साहित्य के आधार पर भी लिखते हैं उनके पात्र भी पुराने एटयारों की तरह अलौकिक रूप से शक्ति शाली एंव बुद्धिमान होते हैं परन्तु वे अपने कथानक को कोई रूपों नहीं दे पाते। इसके विपरीत श्री ओमप्रकाश शर्मा इन दोन बातों से बचे हैं फिर भी वे अपने पाठकों को बांध रखने की असाधारण क्षमता रखते हैं।

श्री शर्मा जी ने यद्यपि प्रारम्भ में प्रेरणा परम्परागत श्री देवकीनन्दन खत्री से ली थी पर वह आज अपने साहित्य को अधिक आधुनिक धरातल पर ले आये हैं। उनकी कहानी व्यर्थ इधर उधर नहीं घूमती एवं प्रखर व्यक्तित्व वाले उनके पात्र अपनी विशेषताओं व कमजोरियों से युक्त होते हैं। कहानी का स्थान बड़ा शहर हो अथवा गांव, घना जंगल हो अथवा भव्य महल, केवल काल्पनिक नहीं होते रहस्य रोमांच का ताना बान बड़ी सुघड़ता से यथार्थ के धरातल पर बुना लगता है।

श्री शर्मा लगभग २५० उपन्यास लिख चुके हैं। जिनमें कुछ सामाजिक और एतिहासिक भी हैं इस प्रकार वे केवल रोमांचक

साहित्य के ही लेखक नहीं हैं, । वे प्रगतिशील लेखक और राष्ट्रीय एकता के समर्थक भी हैं, बिना किसी उपदेशात्मक तरीके के सामाजिक जीवन के भ्रष्टाचार तथा अपराधियों की गतिविधियों को पाठकों के सम्मुख रखना उनकी विशेषता है। भले ही उस अपराधी का सम्बन्ध समाज के ऊँचें वर्ग से क्यों न हो उनका प्रमुख पात्र राजेश —आदर्श है, बुद्धिमान है, ईमानदार है तथा केन्द्रीय इन्टैलीजेंस का समझदार जासूस हैं। उसका विवाहित जीवन भी सुखद है। शर्मा जी के अधिकांश उपन्यासों में राजेश के सहकारी दो और जासूस भी हैं जयन्त व जगन, और है अर्न्तराष्ट्रीय ठग के नाम से विख्यात जगत। एक और प्रमुख पात्र हैं गोपाली जो भूतपूर्व रियासत के अवकाश प्राप्त जासूस हैं जिनका उद्देश्य है आनन्द के साथ साथ कार्य में उत्तेजना एव साहस की खोज करना। ये पात्र जेम्स बांड के विभिन्न स्वरूप प्रतीत भले ही हो लें परन्तु उसका प्रतिरूप नहीं हैं। कारण है इन पात्रों का मानवोचित व्यवहार। राजेश, जगत अथवा गोपाली सुपरमैन न लगकर वास्तविकता के धरातल पर मनुष्य लगते हैं। शर्मा जी के पाठक उन्हें भली प्रकार पहचानते हैं और उनके कारनामों से भरे उपन्यास की प्रतीक्षा करते हैं।

शर्मा जी ने साहित्य को हरक्यूल पारेट, लार्ड व पीटर विमजे, नीरो वुल्फ या पैरीमेसन नहीं दिये। कारण उनके कथानकों की विविधता, प्रस्तुतीकरण एवं प्रेत अथवा आत्माओं से रहस्य से पर्दा हटाने की स्पष्ट इच्छा। भारत के बाहर व भीतर कोई भी नई घटना उनका ध्यान आकर्षित कर लेती हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में चैकोस्लोवाकिया, वियतनाम, भारत नेपाल सीमा (तस्कर व्यापार) और पाकिस्तान की घटनाओं को पाठको के सामने रखा है। उनका लिखा उपन्यास विलक्षणता व ताजगी लिये हुए होता है। साथ ही कथानक की पेचीदगियां प्रभावशाली होती हैं।

हिन्दी में साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है। एक पुस्तकालय साहित्य दूसरा साहित्य जनप्रिय साहित्य। जन-प्रिय साहित्य के प्रथम उपन्यासकार देवकी नन्दन खत्री ने लोगों को हिन्दी पढ़ने को बाध्य किया और अब ओमप्रकाश शर्मा अपने उपन्यासों के माध्यम से जनता के हर वर्ग तक पहुँच गये। उनकी इस पहुँच ने पुस्तकालय और जनप्रिय साहित्य के बीच की खाई पर पुल बना दिया है।

पश्चिम में भी आर्थर कानन डायल ने शरलाक होम्स की कहानियों से जासूसी साहित्य को लोकप्रियता दिलाई। श्री ओमप्रकाश शर्मा की तुलना हम किसी भी पाश्चात्य साहित्य के लेखक से नहीं कर सकते भले ही वो डोरोथी सेअार हो, नीरो वुल्फ के जनक रैकर्थ स्टाउट हों अथवा फ्रांसीसी लेखक जार्ज सिमनॉन्, और न ही शर्मा जी की तुलना भावनात्मक साहित्यकारों से की जा सकती है। इसे कोई भी नकार नहीं सकता कि उन्होंने इस साहित्य को एक नया मोड़ देकर जन-प्रिय साहित्य बनाया है। जब कभी उन्हीं के नकलचियों का साहित्य पढा जाता है अथवा उन लेखकों को पढ़ते हैं जो अंग्रेजी के जासूसी उपन्यासों से कतर ब्यौंत करके लिखते हैं अथवा इयान फ्लेमिगं के जेम्स बांड के नाम पर लिखते हैं तो श्री शर्मा जी इन सबके बीच अपना सिर ऊंचा किये खड़े नजर आते हैं इसक कारण है उनका मौलिक कथानक, जीवन पात्र संतुलित हास्य तथा कहानी को सीधे सादे तरीके से कहने का ढंग। उन्होने इस ढंग का साहित्य तैयार करके पाठकों की रुचि को सुधारा है तथा अपराध व भ्रष्टाचार के प्रति पाठक के दृष्टिकोण को परिवर्तित किया है।

पश्चिम की देने होने के बाबजूद अपराध साहित्य वहां अधिक पुराना नहीं कहा जा सकता। परन्तु भारत में ये अभी

विकासशील दिशा में है कारण कुछ गिने चुने बुद्धिमान लेखकों ने ही इसे अपनाया है। हिन्दी में इस साहित्य का प्रारम्भ कुछ उपन्यासों के अनुवाद अथवा पश्चिम की पुस्तकों के रूपान्तर से हुआ है परन्तु पिछले दशक में इनके साथ साथ भारतीय पात्रों एवं परिवेशके मौलिक उपन्यास भी सामने आये हैं।

प्रणय गाथाओं के बाद लोकप्रियता की दृष्टि से जासूसी साहित्य का ही स्थान है। इसका प्रचलन इतना है कि कुछ छोटे पुस्तकालय भले ही वो पुस्तक विक्रेता की छोटी सी दुकान हो अथवा परचून की दुकान-प्रत्येक छोटे शहर अथवा कस्बों में प्रतिदिन १० से २० पैसे देकर युवक युवतियों तथा गृहणियों को ये पुस्तकें उपलब्ध कर देते हैं। देहली जैसे नगरों में तो लगभग प्रत्येक आवासिय क्षेत्रों में तो पुस्तकालय जोर शोर से अपना काम चला रहे हैं। इस व्यापार के लाभ से आकर्षित होकर जासूसी उपन्यासों की संख्या बढ़ रही है। परन्तु नैतिकता के प्रचारक आज इस साहित्य का उतना ही विरोध कर रहे हैं जितना कि प्रेम गाथाओं फिल्मों एवं ताशों का करते हैं। उनकी दृष्टि में ये साहित्य जूए के बराबर अपराध हैं।

जापानी उपन्यासकार सुबोची शोयो ने 'एसेन्स आफ नावेल' नामक उपन्यास में लिखा है "उपन्यास का सार मान्यता प्राप्त नैतिकताओं में निहित है तेसा लेखक मानते हैं एवं इसी दृष्टि से वे नैतिकता के ढांचे में अपने कथानक को बुनते हैं। यदि ये प्रेमगाथाओं के लोकप्रिय साहित्य के लिये सही है तो फिर अपराध कथाओं के लिये भी सही है।" कोई भी जासूसी साहित्य का लेखक ये मानकर नहीं चलता कि अपराधी हीरो है भले ही वह वीर एवं साधन सम्पन्न क्यों न हो। लेखक के अनुसार उपन्यासों को जापान में शिक्षा का माध्यम समझा जाता रहा है।

भारत में यद्यपि उपन्यासों को शिक्षा का माध्यम नहीं

मानते तो भी भारतीय पाठकों की रुचि अपने जापानी भाइयों से भिन्न नहीं है। हिन्दी के पाठक अधिकतर बम्बईया फिल्मों से प्रभावित होते हैं और मारधाड से भरपूर प्रेम प्रसंगों को ही पसंद करते हैं। परन्तु जासूसी साहित्य का पाठक केवल सैक्स या मारधाड में रुचि नहीं रखता यद्यपि जेम्स बांड के रचियता इयान फ्लेमिंग के नकलचियों ने उन्हें वो सब देने का प्रयत्न किया है।

पश्चिम के हत्या, अपराध एवं जासूसी साहित्य ने भिन्न भिन्न प्रकार के कथानक दिये हैं एवं उनके लेखक इस पीढ़ी के श्रेष्ठ लेखकों में गिने जाते हैं।

हिन्दी में अगाथा क्रिस्टी अथवा डोरोथी सैय्यार अथवा कानन डायल या जार्ज सिमनान्हें नहीं हैं। इसके साथ-साथ हमारे यहाँ शरलाक होम्स अथवा हरक्यूल पारेट जैसे जासूस भी नहीं हैं। यूं हिन्दी में अधिकांश उपन्यासकार पश्चिम के ढांचे पर ही अपने को जमाने में लगे हैं। यद्यपि उनका ये प्रयास केव नकल मात्र बन कर रह गया है।

अपने यहाँ अपराध साहित्य को प्रारम्भ का श्रेय तो 'चन्द्रकांता' के प्रथम उपन्यासकार के सुपुत्र दुर्गाप्रसाद खत्री को जाता हैं। जिसने अपने "रक्त मंडल" एवं "सफेद शैतान" द्वारा ब्रिटिश एवं उस समय इंडोचीन कहे जाने वाले फ्रांसिस साम्राज्य को भारत से हटाने के लिए बने गुप्त संगठनों का वर्णन किया है। भारतीय पृष्ठभूमि के इस उपन्यास को अवैध करार दे दिया गया था परन्तु बाद में इसका प्रकाशन किसी विदेशी घटना स्थल में परिवर्तित करके किया गया। ये पुस्तकें जासूसी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कृति थीं जिनमें क्रूरता व पाशविकता नहीं थी वरन् था प्रबुद्ध व्यक्तियों का वो समूह जो विदेशी शासकों के विरुद्ध विद्रोह का संचालन कर रहा था।

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री का प्रभाव श्री ओमप्रकाश शर्मा पर पड़ा है। श्रीखत्री उनकी प्रेरणा के श्रोत अवश्य रहें हैं परन्तु, फिर भी ओमप्रकाश शर्मा का लिखने का अपना विशिष्ट एवं मौलिक तरीका है।

शर्मा जी द्वारा रचित आदर्श एव मानवोचित जासूस राजेश के नेतृत्व में उनके पात्र हिंसा अथवा हत्या का मार्ग नहीं अपनाते उनकी शक्ति उनके साहस एवं बुद्धिमत्ता में है। उनके सरकारी जासूसों का साथी है जगत जो अन्तर्राष्टीय ठग कहलाता है जो यद्यपि घुमक्कड़ और मस्त प्रवृति का है, पर राजेश से प्रभावित होकर हमेशा कानून का ही साथ देता है। शर्मा जी का साहित्य यद्यपि सैक्स से अछूता नहीं है पर फिर भी पाठकों को स्वस्थ्य मनोरंजन देता है। वे स्वच्छ जन जीवन एवं राष्ट्रीय एकता का उद्देश्य सामने रखकर लिखते हैं एवं अपने पाठकों तक अपने प्रगतिशील विचार हास्य एवं मानवता से युक्त जासूसी साहित्य द्वारा पहुंचाते हैं।

पंचतत्र के लेखक विष्णु शर्मा ने कथाओं का उद्देश्य कहानियों द्वारा बच्चों को सही रास्ता बताना बताया है। इस दृष्टि से ओमप्रकाश शर्मा का तरीका कुछ नया नहीं है, वह अपने उपन्यासों द्वारा अ-क्षेत्रीय एवं असाम्प्रदायिक राष्ट्रीयता को बढ़ावा देते हैं तथा समाज में मौजूद अपराधियों की गतिविधियों का दिग्दर्शन करते हैं। उनकी लोकप्रियता एवं पाठकों पर सम्भावित प्रभाव को समझ कर कोई भी उनके कार्य की महत्ता को समझ सकता है।

नकलचियों के अतिरिक्त कुछ अन्य लेखकों ने हिन्दी में इस दिशा में प्रयत्न किया है। कुछ पात्र एवं कथानक रचे गये हैं परिणाम स्वरूप हिन्दी के और पाठक भी इस ओर आकर्षित हुए हैं। पाश्चम में केवल साधारण आदमी ही इसका पाठक

नहीं रहा है वरन् सर विन्सटन चर्चिल जैसे व्यक्ति भी ऐसे साहित्य के प्रसंशक रहे हैं। पादरी सहृष्य जासूस फादर ब्राउन अंग्रेजी के प्रसिद्ध साहित्यकार जी. के चैस्टरटन की ही देन हैं। एक प्रसिद्ध ब्रिटिश अर्थ शास्त्री ने भी जासूसी कथायें लिखी हैं। स्व० अर्ल स्टनले गार्डनर का पैरीमेशन जो हत्या का रहस्य खोलने में प्रगतिशील तरीके अपनाता है दुनिया के प्रत्येक भाग व हर वर्ग में लोक प्रिय हैं।

इस प्रकार की कथाओं में भले ही कोई शैक्षिक महत्व न मानें फिर भी ये रोमांचित करती हैं अतः इसका स्वागत है। कोई भी जीवन को रसहीन नहीं कर नाचाहता इसीलिये जो वस्तु जीवन को नीरस होने से बचाती हैं वो सम्भवतया कभी ही शारीरिक अथवा मानसिक उपयोगिता की कसौटी पर कसी जाती हो ? हम केवल प्रोटीन के ही भोजन पर जिन्दा नहीं रह सकते। हमें कभी-कभी चटपटे भोज्य पदार्थों की भी आवश्यकता होती है। मानसिक जीवन के लिये इस साहित्य का वही आकर्षण है जो भोजन में मसालों और चटनी होता है।

अंत में एक अंग्रज साहित्यकार का कथन लिखना उपर्युक्त रहेगा। जिसने कहा था "मन बहलाव के साधनों की दौड़ में मंजिल के समीप एक बिन्दु ऐसा आयेगा जब आदमी केवल जासूसी कथायें ही पढ़ेगा।"

(अंग्रेजी में प्रकाशित दो लेखों के अंश, सौजन्य हिन्दुस्तान टाइम्स, राउन्ड टेबल)

नहीं रहा है वरन् सर विन्सटन चर्चिल जैसे व्यक्ति भी ऐसे साहित्य के प्रसंशक रहे हैं। पादरी सहृष्य जासूस फादर ब्राउन अंग्रेजी के प्रसिद्ध साहित्यकार जी. के चैस्टरटन की ही देन हैं। एक प्रसिद्ध ब्रिटिश अर्थ शास्त्री ने भी जासूसी कथायें लिखी हैं। स्व० अर्ल स्टनले गार्डनर का पैरीमेशन जो हत्या का रहस्य खोलने में प्रगतिशील तरीके अपनाता है दुनिया के प्रत्येक भाग व हर वर्ग में लोक प्रिय हैं।

इस प्रकार की कथाओं में भले ही कोई शैक्षिक महत्व न मानें फिर भी ये रोमांचित करती हैं अतः इसका स्वागत है। कोई भी जीवन को रसहीन नहीं कर नाचाहता इसीलिये जो वस्तु जीवन को नीरस होने से बचाती हैं वो सम्भवतया कभी ही शारीरिक अथवा मानसिक उपयोगिता की कसौटी पर कसी जाती हो ? हम केवल प्रोटीन के ही भोजन पर जिन्दा नहीं रह सकते। हमें कभी-कभी चटपटे भोज्य पदार्थों की भी आवश्यकता होती है। मानसिक जीवन के लिये इस साहित्य का वही आकर्षण है जो भोजन में मसालों और चटनी होता है।

अंत में एक अंग्रज साहित्यकार का कथन लिखना उपर्युक्त रहेगा। जिसने कहा था "मन बहलाव के साधनों की दौड़ में मंजिल के समीप एक बिन्दु ऐसा आयेगा जब आदमी केवल जासूसी कथायें ही पढ़ेगा।"

(अंग्रेजी में प्रकाशित दो लेखों के अंश, सौजन्य हिन्दुस्तान टाइम्स, राउन्ड टेबल)